इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय वन अकादमी, देहरादून
Indira Gandhi National Forest Academy, Dehradun

नमस्कार

राजभाषा प्रशिक्षण सत्र में आपका हार्दिक स्वागत है..

भाषा /LANGUAGE

भाषा वह साधन है जिसके द्वारा हम अपने विचार या भाव दूसरों के सामने प्रकट कर सकें तथा दूसरों के विचारों को जान और समझ सकें।

Language is a medium to communicate our ideas and thought to others and to understand others.

भाषा के भेद Types of language

प्रयोग की दृष्टि से भाषा के दो भेद हैं -

1. मौखिक भाषा - वह भाषा जो केवल बोली ही जाए, लिखी न जाए, मौखिक भाषा कहलाती है। मौखिक भाषा ही भाषा का मूल रूप है।

Oral Language - The language that is spoken only, not written, is called oral language. Oral language is the basic form of language.

2. लिखित भाषा - भाषा का वह रूप जिसके द्वारा लिपि के रूप में लिखकर अपने विचार दूसरों पर प्रकट किए जाएं, लिखित भाषा कहलाती है। लिखित भाषा का साहित्य होता है।

Written Langauge - The form of language by which a person can express his thoughts by writing in script, is called written language. There is literature available in written language.

लिपि / Script

भाषा को लिखित रूप देने वाले वर्ण (अक्षर/Letters) चिह्नों को लिपि कहते हैं। हिंदी तथा संस्कृत भाषाओं की लिपि का नाम देवनागरी है। भिन्न-भिन्न प्रकार से लिखी जाने के कारण विश्वभर की भाषाओं की लिपियां अलग-अलग हैं। जैसे -

भाषा	**लिपि**
उर्दू	फारसी
अरबी	अरबी
पंजाबी	गुरुमुखी
अंग्रेज़ी	रोमन

(अरबी और फारसी लिपियां दाएं से बाएं लिखी जाती हैं।)

हिंदी वर्णमाला-Hindi Alphabets

कुल 52 वर्ण हैं,

जिनमें से 13 स्वर(Vowels) तथा 39 व्यंजन (Consonants) .

स्वर- **अ (a) आ (aa) इ (i) ई (ii) उ (u) ऊ(uu)**

(Vowels) **ऋ (ri) ए (e) ऐ (ai) ओ(o) औ (au)**

अनुस्वार और विसर्ग- अं (am) अः (Ah)

Anuswaar and Visarg

मूल व्यंजन-	क	ख	ग	घ	ङ
Basic Consonants	च	छ	ज	झ	ञ
	ट	ठ	ड	ढ	ण
	त	थ	द	ध	न
	प	फ	ब	भ	म
	य	र	ल	व	
	श	ष	स	ह	

संयुक्त व्यंजन- क्ष त्र ज्ञ श्र
Joint Consonants (Ksha) (Tra) (Gya/Gna) (Shra)

अतिरिक्त व्यंजन- ड़ ढ़ (सड़क, पढ़ना)
Additional Consonants

आगत ध्वनियां- ख़ ज़ फ़
Received Sounds

(अरबी-फारसी/अंग्रेजी से हिंदी में पांच ध्वनियां आई हैं- क़, ख़, ग़, ज़, फ़. । इनमें से क़ तथा ग़ उच्चारण के स्तर पर अनुकूलित नहीं हो पाई हैं। अतः इनका तब तक लेखन अनिवार्य नहीं है जब तक उर्दू के उच्चारण का विशेष रूप से उल्लेख करना आवश्यक न हो । शेष तीनों ध्वनियों के सही उच्चारण के लिए ख, ज, फ के नीचे नुक्ते (.) का प्रयोग (ख़, ज़, फ़) किया जाए.)

क	ख	ग	घ	ङ
ka	kha	ga	gha	na
च	छ	ज	झ	ञ
cha	chha	ja	jha	na
ट	ठ	ड	ढ	ण
ta	tha	da	dha	na
त	थ	द	ध	न
ta	tha	da	dha	na
प	फ	ब	भ	म
pa	pha	ba	bha	Ma

क्रमशः

य	र	ल	व	----
ya	ra	la	va/wa	----
स	श	ष	ह	----
sa	sha	Sha	ha	----
ड़	ढ़	----	----	----
ada	adha	----	----	----
क्ष	त्र	ज्ञ*	श्र	----
ksha	tra	*jna* (gya)*	shra	----

* *हिंदी में इसका उच्चारण 'ग्य' रूप में भी किया जाता है.*
* *रोमन वर्णमाला में इसे gya भी लिखा जाता है.*

वर्ण के भेद

वर्ण दो प्रकार के होते हैं - (1) स्वर (Swar) / Vowels,
(2) व्यंजन (Vyanjana) / Consonants

स्वर (Swar) - स्वतंत्र रूप से बोले जाने वाले वर्ण स्वर कहलाते हैं।

देवनागरी में 13 स्वर (11+2) हैं। स्वर के तीन भेद हैं -

1. ह्रस्व (मूल) स्वर - (Basic Vowels) उच्चारण में एक मात्रा का समय लगता है। जैसे- अ, इ, उ, ऋ

2. दीर्घ (संधि) स्वर - इनके उच्चारण में दो मात्राओं का समय लगता है। जैसे- आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।

3. प्लुत स्वर - इनके उच्चारण में ह्रस्व से तिगुना समय लगता है। प्लुत स्वर की पहचान के लिए स्वर के पीछे ३ की संख्या लिखी जाती है। यथा- ओ३म् । यहां 'ओ' प्लुत स्वर है। इसका प्रयोग प्राय: संस्कृत में होता है।

व्यंजन (Vyanjana) - वे वर्ण, जो स्वरों की सहायता से बोले जाएं, व्यंजन कहलाते हैं। यथा- क, च, ट, त, प आदि। देवनागरी लिपि में 33 व्यंजन होते हैं। 'ड़' और 'ढ़' को भी व्यंजन में ही गिना जाता है। इन्हें जोड़ने पर व्यंजनों की संख्या 35 हो जाती है।

उच्चारण के आधार पर व्यंजनों के तीन भेद हैं -

1. स्पर्श - जिन वर्णों के उच्चारण में जिह्वा मुख के विभिन्न भागों का स्पर्श करती है, वे स्पर्श व्यंजन कहलाते हैं। क से म तक (कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, पवर्ग) सभी स्पर्श व्यंजन हैं।

2. अंत:स्थ - जिन वर्णों के उच्चारण में आवाज कंठ से निकलती प्रतीत होती है, वे अंत:स्थ वर्ण कहलाते हैं। ये चार होते हैं - य, र, ल, व ।

3. ऊष्म- जिन वर्णों के उच्चारण में श्वास तेजी से चले, नाक से सीटी जैसी आवाज़ हो, वे ऊष्म वर्ण कहलाते हैं। - श, ष, स, ह ।

शब्दकोश में वर्णक्रम इस प्रकार होता है-

स्वर-	अं	अः	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ
	ऋ	ए	ऐ	ओ	औ			
व्यंजन-		क	क्ष	ख	ग	घ	ङ	
		च	छ	ज	ज़	झ	ञ	
		ट	ठ	ड	ड़	ढ	ढ़	ण
		त	त्र	थ	द	ध	न	
		प	फ	ब	भ	म		
		य	र	ल	व			
		श	श्र	ष	स	ह		

नोट- अ का एक रुप **s** भी था, जो सामान्यतः अब प्रचलन में नहीं है.

वर्णक्रम के अनुसार शब्द-

अंग	अंबर	अतः	अब	आग
इधर	ईख	उधर	ऊपर	ऋण
एक	ऐनक	ओस	औषध	

कंठ	कलम	खग	गरम	घर
चंदन	चटपट	छल	जड़	झलक
टमटम	ठग	डर	ढक	तट
थल	दस	धन	नगर	पंच
पत्र	पर	फल	बटन	भवन
मन	यश	रण	रस	लहर
वन	षटकोण	शहर	सब	हम

शब्दकोश के अनुसार शब्दों को संयोजित करने के सूत्र

1. विशेषक चिह्न वाले शब्द बाद में
   माल - मॉल
   कालेज - कॉलेज

2. सबसे पहले अं/अँ/अ: से आरंभ होने वाले शब्द आएंगे ।

3. उसके बाद सभी स्वरों से आरंभ होने वाले शब्द स्वरों के क्रमानुसार आएंगे ।

4. पूरा अक्षर पहले और आधा बाद में आएगा ।

5. ड/ड़ को समान मानें ।

निम्नलिखित को शब्दकोश के अनुसार व्यवस्थित करें -

जुंबिश	ज्ञेय	ज्ञाता	ज्यादती
जंगम	जमीन	जिंदगी	जिंस
जुलाहा	ज्वार	ज्येष्ठता	ज्योत्सना

जुंबिश	ज्ञेय	ज्ञाता	ज्यादती
जंगम	जमीन	जिंदगी	जिंस
जुलाहा	ज्वार	ज्येष्ठता	ज्योत्सना

जंगम	जमीन	जिंदगी	
जिंस	जुंबिश	जुलाहा	ज्ञाता
ज्ञेय	ज्यादती	ज्योत्सना	ज्वार

व्यंजनों के उच्चारण स्थल-

	अल्पप्राण Unaspirated	महाप्राण Aspirated	अल्पप्राण Unaspirated	महाप्राण Aspirated	अनुनासिक Nasal
कंठ्य Gutturals	क	ख	ग	घ	ङ
	ka	kha	ga	gha	na
तालव्य Palatals	च	छ	ज	झ	ञ
	cha	chha	ja	jha	na
मूर्धन्य Cerebrals	ट	ठ	ड	ढ	ण
	ta	tha	da	dha	na
दंत्य Dentals	त	थ	द	ध	न
	ta	tha	da	dha	na
ओष्ठ्य Labials	प	फ	ब	भ	म
	pa	pha	ba	bha	ma

क्रमशः

	अल्पप्राण Unaspirated	महाप्राण Aspirated	अल्पप्राण Unaspirated	महाप्राण Aspirated	अनुनासिक Nasal
अंतःस्थ व्यंजन /अर्ध स्वर Semi-vowels	य	र	ल	व	----
	ya	ra	la	va/wa	----
ऊष्ण वर्ण Sibilants	स	श	ष	ह	----
	sa	sha	Sha	ha	----
महाप्राण Aspirated	ड़	ढ़	----	----	----
	ada	adha	----	----	----
संयुक्त व्यंजन Conjunct Consonant	क्ष	त्र	ज्ञ*	श्र	----
	ksha	tra	*jna* (gya)*	shra	----

* *हिंदी में इसका उच्चारण 'ग्य' रूप में भी किया जाता है.*
* *रोमन वर्णमाला में इसे gya भी लिखा जाता है.*

स्वर और उनकी मात्राएं तथा व्यंजनों पर लगाने की विधि-

अ		क्+अ	क
आ		क्+आ	का
इ		क्+इ	कि
ई		क्+ई	की
उ		क्+उ	कु
ऊ		क्+ऊ	कू
ऋ		क्+ऋ	कृ

ए		क्+ए	के
ऐ		क्+ऐ	कै
ओ		क्+ओ	को
औ		क्+औ	कौ
अं		क्+अं	कं
अः		क्+अः	कः

टिप्पणी- जब किसी व्यंजन का उच्चारण स्वर रहित किया जाता है तो व्यंजन के नीचे हल चिह्न (्) का प्रयोग किया जाता है.

स्वर Vovels

अ	as	‘a’	in	arrive
आ	as	‘aa’	in	car

अब	अमर	अलग
ab	amar	alag
Now	Personal name	Separate

आम	आग	आज
aam	aag	aaj
Mango	Fire	Today

स्वर Vovels

इ ई

as	‘i’	in	ill
as	‘ii’	in	eat

इलाज	इनाम	इमली
ilaaj	inaam	imlii
Treatment	Prize	Tamarind

ईख	ईश्वर	ईमान
iikh	iishwar	iimaan
Sugarcane	God	Faith

स्वर Vovels

उ	as	‘u’	in	put
ऊ	as	‘uu’	in	june

उपज	उजाला	उपाय
upaj	ujaala	upaay
Product	Light	Means

ऊन	ऊपर	ऊंट
uun	uupar	uuNT
Wool	Above	Camel

स्वर Vovels

ए	as	‘ee’	in	make
ऐ	as	‘ai’	in	paisa

एक	एकाएक	एड़ी
eek	eekaaeek	eeRii
One	Suddenly	Heel

ऐनक	ऐसा	ऐब
ainak	aisaa	aib
Eye-glasses	So, such	Bad habit

स्वर Vovels

ओ	as	‘o’	in	go
औ	as	‘au’	in	owl

ओस	ओला	ओर
oos	oolaa	oor
Dew	Hail	Towards

औरत	औकात	और
aurat	aukaat	aur
Woman	Status	And

स्वर Vovels

अं	as	‘am/um’	in	dumb
अः	as	‘ah’	in	hurrah

अंश	अंबर	अंगूर
ansh	ambar	angoor
Part	Sky	Grapes

अतः	प्रातः	
atah	praatah	
Therefore	Morning	

स्वर Vovels

ऑ	as	‘ao’	in	office
ऋ	as	‘ri’	in	ripple

कॉफी	डॉक्टर	ऑफिस
koaphii	DoakTar	Oaphis
Coffee	Doctor	Office

ऋतु	ऋषि	ऋण
ritu	riShi	riN
Season	Saint	Loan

अभ्यास

निम्न व्यंजनों (consonants) को दी गई मात्रा के साथ लिखें -

	ि	ी
क		
ख		
च		
म		
प		
ल		
य		
व		

निम्न व्यंजनों (consonants) को दी गई मात्रा के साथ लिखें -

	ु	ू
द		
भ		
ट		
ठ		
प		
ज		
श		
व		

निम्न व्यंजनों (consonants) को दी गई मात्रा के साथ लिखें -

	े	ै
क		
ख		
च		
म		
प		
ल		
य		
व		

निम्न व्यंजनों (consonants) को दी गई मात्रा के साथ लिखें -

	ो	ौ
क		
ख		
च		
म		
प		
ल		
य		
व		

संयुक्त व्यंजन consonant cluster

ख	ख्	+	य	=	ख्य	—	मुख्य
ग	ग्	+	य	=	ग्य	—	योग्य
घ	घ्	+	न	=	घ्न	—	विघ्न
च	च्	+	च	=	च्च	—	कच्चा / उच्च
ज	ज्	+	य	=	ज्य	—	राज्य
ञ	ञ्	+	ज	=	ञ्ज	—	व्यंजन
ण	ण्	+	ट	=	ण्ट	—	घण्टा
त	त्	+	त	=	त्त / त्त	—	भत्ता
थ	थ्	+	य	=	थ्य	—	तथ्य
ध	ध्	+	य	=	ध्य	—	अध्ययन
न	न्	+	न	=	न्न	—	अन्न
प	प्	+	य	=	प्य	—	प्यास

व्यंजनों के साथ ‘र’ की उत्पत्ति

Occurance of ‘र’ secondary symbol with the consonants

क्	+	र	=	क्र	:	क्रमांक (serial)
ड्	+	र	=	ड्र	:	ड्रीम (dream)
ग्	+	र	=	ग्र	:	ग्रह (planet)
घ्	+	र	=	घ्र	:	व्याघ्र (tiger) / शीघ्र (soon)
स्	+	र	=	स्र	:	स्रोत (source)
श्	+	र	=	श्र	:	श्रोता (audience)
ह्	+	ऋ	=	ह्र	:	ह्रदय (heart)
र्	+	म	=	र्म	:	कर्म / धर्म
र्	+	य	=	र्य	:	कार्य / धैर्य
र्	+	द	=	र्द	:	दर्द / सर्द
त्	+	र	=	त्र	:	चित्र / सत्र

संज्ञा (Noun)

संज्ञा (Noun) - जिन शब्दों से किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, जाति, गुण या भाव के नाम का ज्ञान होता है, उन्हें संज्ञा-शब्द कहते हैं।

जैसे- मोहन, कमल, दिल्ली आदि

i. मोहन विद्यालय जाता है।
ii. मैं कलम से लिखता हूँ।
iii. मैं दिल्ली जाऊँगा।

इन वाक्यों में मोहन, विद्यालय, कलम और दिल्ली शब्द संज्ञा हैं।

संज्ञा के प्रकार

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा (Proper Noun) - जिस संज्ञा से किसी विशेष मनुष्य, पशु तथा स्थान आदि का बोध होता है। जैसे - सोहन, कानपुर, हिमालय, आम आदि

2. जातिवाचक संज्ञा (Common Noun) - जिस संज्ञा से किसी जाति या समुदाय का बोध होता है, जैसे- सेना, पशु, पुस्तक, गाय आदि

3. भाववाचक संज्ञा (Abstract Noun) - जो संज्ञा-शब्द किसी गुण, भाव, अवस्था, स्वभाव, दशा आदि का ज्ञान कराते हैं; जैसे - मिठास, सुन्दरता, नम्रता, बचपन आदि।

(भाववाचक संज्ञा का केवल अनुभव किया जा सकता है।)

मानव - मानवता,	नारी - नारीत्व,	शत्रु - शत्रुता
अपना - अपनत्व,	निज - निजत्व,	स्व - स्वत्व
कटु - कटुता,	सुंदर - सुंदरता,	दूर - दूरी
गिरना - गिरावट,	पढ़ना - पढ़ाई ,	हँसना - हँसी

अभ्यास –

1. मेरे मित्र का नाम _____ है।
2. कुत्ता एक पालतू _____ है।
3. आगरा में _____ है।
4. _____ एक अच्छा गुण है।
5. भारत के उत्तर में _____ पर्वत है।

लिंग (Gender)

जिनसे यह ज्ञात होता है कि संज्ञा पुरुष जाति की है, या स्त्री जाति की, उन्हें लिंग कहते हैं।

हिन्दी भाषा में दो लिंग होते हैं –

1. पुल्लिंग - जिस शब्द से पुरुष जाति का बोध होता है उसे पुल्लिंग कहते हैं, जैसे – राम जाता है।
   इस वाक्य में राम पुल्लिंग है, क्योंकि राम शब्द से पुरुष जाति का बोध होता है।
2. स्त्रीलिंग - जिस शब्द से स्त्री जाति का बोध होता है उसे स्त्रीलिंग कहते हैं, जैसे – गीता स्कूल जाती है।
   इस वाक्य में गीता शब्द स्त्रीलिंग है, क्योंकि गीता शब्द से स्त्री जाति का बोध होता है।

लिंग परिवर्तन (Changing the Gender)

1. अकारान्त तथा आकारान्त पुल्लिंग शब्दों के अंतिम 'अ' अथवा 'आ' को 'ई' कर दिया जाता है; जैसे -

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
लड़का	लड़की
बेटा	बेटी
चाचा	चाची
घोड़ा	घोड़ी
बकरा	बकरी
गुड्डा	गुड्डी
मुन्ना	मुन्नी

लिंग परिवर्तन (Changing the Gender)

2. कुछ आकारान्त पुल्लिंग शब्दों के अंतिम 'आ' को 'इया' कर दिया जाता है; जैसे -

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
बूढ़ा	बुढ़िया
गुड्डा	गुड़िया
कुत्ता	कुतिया
डिब्बा	डिबिया

लिंग परिवर्तन (Changing the Gender)

3. व्यवसायबोधक शब्दों के अंतिम स्वर को 'इन' कर दिया जाता है; जैसे -

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
माली	मालिन
धोबी	धोबिन

4. पदवी तथा उपजातिवाचक शब्दों के अंत में स्वर को 'आइन' कर दिया जाता है; जैसे-

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
पंडित	पंडिताइन
ठाकुर	ठकुराइन
लाला	ललाइन

लिंग परिवर्तन (Changing the Gender)

5. कुछ शब्दों के अंत के स्वर को 'आनी' कर दिया जाता है; जैसे -

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
सेठ	सेठानी
नौकर	नौकरानी
देवर	देवरानी
जेठ	जेठानी

लिंग परिवर्तन (Changing the Gender)

6. कुछ शब्दों के अन्त के 'आन' को 'अती' कर दिया जाता है; जैसे -

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
भगवान	भगवती
श्रीमान	श्रीमती
गुणवान	गुणवती
पुत्रवान	पुत्रवती
बलवान	बलवती

लिंग परिवर्तन (Changing the Gender)

7. कुछ शब्दों के अन्त में 'ई' को 'इनी' कर दिया जाता है; जैसे -

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
तपस्वी	तपस्विनी
स्वामी	स्वामिनी

8. कुछ अकारान्त शब्दों के अन्त में 'नी' लगा दिया जाता है; जैसे -

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
शेर	शेरनी
हंस	हंसिनी
मोर	मोरनी
सिंह	सिंहनी

लिंग परिवर्तन (Changing the Gender)

9. कुछ शब्दों के अंत में 'आ' लगा देते हैं; जैसे -

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
सुत	सुता
बाल	बाला
प्रिय	प्रिया
मूर्ख	मूर्खा

लिंग परिवर्तन (Changing the Gender)

10. कुछ शब्दों के अंतिम 'अक' का 'इका' कर दिया जाता है; जैसे -

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
लेखक	लेखिका
नायक	नायिका
पाठक	पाठिका
बालक	बालिका

लिंग परिवर्तन (Changing the Gender)

11. कुछ संज्ञा शब्दों के स्त्रीलिंग में बिल्कुल भिन्न रूप बनते हैं; जैसे -

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
वर	वधु
पिता	माता
भाई	बहन
पुरुष	स्त्री
बैल	गाय

लिंग परिवर्तन (Changing the Gender)

12. कुछ शब्द सदा पुल्लिंग होते हैं; जैसे - पशु, पक्षी, खटमल, मच्छर, बिच्छु, चीता, गैंडा, बाज, कछुआ, खरगोश, गरुड़ आदि।

13. कुछ शब्द सदा स्त्रीलिंग होते हैं; जैसे - मक्खी, मछली, मकड़ी, मैना, कोयल, तितली, दीमक, गिलहरी।

अभ्यास (Exercise)

1. निम्न संज्ञाओं के लिंग बताइये -
   हिमालय, गंगा, सागर, भवानी, राम, राधा, मेज, घर, पुस्तक, कापी, चाय।

2. निम्न वाक्यों में रेखांकित मोटे शब्द पुल्लिंग हैं या स्त्रीलिंग, बताइये -
   क) **गीता** गा रही है।
   ख) **दिल्ली** भारत की **राजधानी** है।
   ग) **बच्चा** खेल रहा है।
   घ) **शेर** ने शिकार किया।
   ड़) चारपाई में **खटमल** है।

3. पुल्लिंग से स्त्रीलिंग बनाइए -

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
बेटा	
कुत्ता	
शेर	
श्रीमान	
पिता	

4. स्त्रीलिंग से पुल्लिंग बनाइए -

स्त्रीलिंग	पुल्लिंग
नानी	
मुर्गी	
घोड़ी	
बहन	
गाय	

वचन (Number)

शब्द के जिस रूप से एक या एक से अधिक संख्या मानी जाए उसे वचन कहते हैं।

वचन दो प्रकार के होते हैं -

1. एकवचन (Singular Number)
2. बहुवचन (Plural Number)

1. एकवचन (Singular Number) –

जिस शब्द से एक संख्या का बोध हो, उसे एक वचन कहते हैं। जैसे –

क) अनुज खेलता है।

ख) मनोरमा खाना पकाती है।

ग) मेज पर पुस्तक है।

रंगीन शब्द से एक संख्या का बोध हो रहा है। अत: ये शब्द एकवचन हैं।

2. बहुवचन (Plural Number) –

जिस शब्द से एक से अधिक संख्या का बोध हो, उसे बहुवचन कहते हैं। जैसे-

क) लड़के फुटबॉल खेल रहे हैं।

ख) आसमान में पतंगें उड़ रही हैं।

ग) मेज पर पुस्तकें रखी हैं।

एकवचन से बहुवचन बनाना

एकवचन	बहुवचन
बात	बातें
रात	रातें
चप्पल	चप्पलें
पुस्तक	पुस्तकें
लड़का	लड़के
बेटा	बेटे
चमचा	चमचे
मोटा	मोटे

एकवचन	बहुवचन
माता	माताएँ
बाला	बालाएँ
कथा	कथाएँ
भाषा	भाषाएँ
बेटी	बेटियाँ
बोली	बोलियाँ
मक्खी	मक्खियाँ
मुर्गी	मुर्गियाँ

अभ्यास (Exercise)

वचन पहचानिए –

1.लड़का, माला, गोली, चिड़िया, पुस्तक, मोटर, मुनि, गधा, लता, बात।

2.लाठियाँ, धोबी, बातें, कलियाँ, बेटियाँ, रोटियाँ, पुस्तकें।

विशेषण (Adjective)

जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता प्रकट करें उन्हें विशेषण कहते हैं।
जैसे- सुन्दर फूल, पांच बालक, काला कुत्ता, लाल गुलाब आदि

ये चार प्रकार के होते हैं –

1. गुणवाचक विशेषण (Qualitative Adjective)
2. परिमाणवाचक विशेषण (Quantitive Adjective)
3. संख्यावाचक विशेषण (Numeral Adjective)
4. सार्वनामिक विशेषण (Demonstrative Adjective)

क्रियाओं में विकार (Inflexions of Verb)

क्रिया का अपना कोई लिंग-भेद या वचन-भेद नहीं होता। यह कर्ता के अनुसार, कर्म के अनुसार और कभी-कभी स्वतंत्र रूप से प्रयोग में आती है। इसमें होने वाले परिवर्तन के निम्नलिखित आधार हैं –

1. काल (Tense)
2. वाच्य (Voice)
3. विधि (Mood)
4. लिंग (Gender)
5. वचन (Number)
6. पुरुष (Person)
7. प्रयोग (Use)

1. काल (Tense) के आधार पर

क्रिया का वह रूप जिससे उसके होने या करने का समय पता चलता है, काल कहलाता है। यह तीन प्रकार का होता है –

i) भूतकाल (Past Tense)
ii) वर्तमान काल (Present Tense)
iii) भविष्य काल (Future Tense)

1. भूतकाल (Past Tense)

क्रिया का वह रूप जब कार्य बीते हुए समय में पूर्ण हो चुका हो।
जैसे- भारत 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्र हुआ था। India got independence on 15th August 1947.

2. वर्तमान काल (Present Tense)

क्रिया का वह रूप जब कार्य का वर्तमान काल में होना या करना पाया जाता है ।
जैसे- रानी गाना गाती है। Rani sings a song.

3. भविष्य काल (Future Tense)

क्रिया का वह रूप जिसमें आने वाले समय में कार्य का होना या करना पाया जाता है।
जैसे- हम सोमवार को हरिद्वार जाएंगे। We will go to Hardwar on Monday.

वाच्य (Voice)

क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि क्रिया का मुख्य कर्ता (subject) है, कर्म है या भाव है, उसे वाच्य कहते हैं।

1. कर्तृवाच्य (Active Voice)

जहां क्रिया का मुख्य विषय 'कर्ता' हो, वहां कर्तृवाच्य (Active Voice) होता है। जैसे-

a) गोपाल पुस्तक पढ़ता है।
b) रजनी खाना बनाती है।

2. कर्मवाच्य (Passive Voice)

क्रिया के जिस रूप से यह बोध हो कि उसका मुख्य विषय 'कर्म' है, उसे कर्मवाच्य (Passive Voice) कहते हैं। जैसे-

a) गोपाल से पुस्तक पढ़ी गई।
b) रजनी से खाना बनाया गया।

3. भाववाच्य (Impersonal Voice)

क्रिया के जिस रूप से यह बोध हो कि उसका मुख्य विषय 'भाव' है, उसे भाववाच्य (Impersonal Voice) कहते हैं। जैसे-

a) गोपाल से पढ़ा नहीं जाता।
b) रजनी से खाना बनाया नहीं जाता।

क्रिया रुपों में बदलाव

हिंदी में क्रिया कभी कर्ता के अनुसार होती है, कभी कर्म के अनुार और कभी स्वतंत्र ।

1. अकर्मक क्रिया (Intransitive Verb) के लिंग और वचन वर्तमान, भूत और भविष्यत् काल में एक जैसे रहते हैं –

(i) लड़का रोता है।
(ii) लड़की रोती है।
(iii) लड़के पाठशाला गए।
(iv) लड़कियाँ पाठशाला गईं।
(v) बालक सोएगा।
(vi) बालिका सोएगी।

2. सकर्मक क्रिया (Transitive Verb) वर्तमान और भविष्यत् काल में 'कर्ता' के अनुसार रहती है -

(i) गोपाल पुस्तक पढ़ता है।
(ii) ऋतु पुस्तक पढ़ती है।
(iii) गोपाल पुस्तक पढ़ेगा।
(iv) ऋतु पुस्तक पढ़ेगी।

3. भूतकाल में प्रयोग की गई क्रिया के कर्ता के साथ 'ने' का प्रयोग होता है और उसके लिंग एवं वचन कर्म के अनुसार होते हैं -

(i) गोपाल ने पुस्तक पढ़ी ।
(ii) ऋतु ने पत्र लिखा ।
(iii) गोपाल ने पुस्तक लिखी होगी ।
(iv) ऋतु ने गाना गाया ।
(v) बिल्ली ने कबूतर पकड़ा।

क्रियाओं के रूप

वर्तमान काल Present Tense

	Masculine Gender		**Feminine Gender**	
	Singular	Plural	Singular	Plural
1st Person	मैं गाता हूँ।	हम गाते हैं।	मैं गाती हूँ।	हम गाती हैं।
2nd Person	तू गाता है।	तुम गाते हो।	तू गाती है।	तुम गाती हो।
3rd Person	वह गाता है।	वे गाते हैं।	वह गाती है।	वे गाती हैं।
1st Person	मैं भाग रहा हूँ।	हम भाग रहे हैं।	मैं भाग रही हूँ।	हम भाग रही हैं।
2nd Person	तू भाग रहा है।	तुम भाग रहे हो।	तू भाग रही है।	तुम भाग रही हो।
3rd Person	वह भाग रहा है।	वे भाग रहे हैं।	वह भाग रही है।	वे भाग रही हैं।

क्रियाओं के रूप

भविष्यत् काल

	Masculine Gender		Feminine Gender	
	Singular	Plural	Singular	Plural
1st Person	मैं भागूंगा।	हम भागेंगे।	मैं भागूंगी।	हम भागेंगी।
2nd Person	तू भागेगा।	तुम भागोगे।	तू भागेगी।	तुम भागोगी।
3rd Person	वह भागेगा।	वे भागेंगे।	वह भागेगी।	वे भागेंगी।
सम्भाव्य भविष्य				
1st Person	मैं भागूं।	हम भागें।	मैं भागूं।	हम भागें।
2nd Person	तु भागे।	तुम भागो।	तु भागे।	तुम भागो।
3rd Person	वह भागे।	वे भागें।	वह भागे।	वे भागें।

सर्वनाम (Pronoun)

संज्ञा के स्थान पर आने वाले शब्दों को सर्वनाम कहते हैं। Pronoun is a word that is used as a substitution for a noun.

e.g. रमेश पढ़ रहा है, उसे मत सताओ।

आइये एक उदाहरण के द्वारा सर्वनाम को विस्तार से समझते हैं। नीचे लिखे वाक्यों को ध्यानपूर्वक देखे –

पेड़-पौधे प्रकाश-संश्लेषण की क्रिया में ऑक्सीजन मुक्त करते हैं।
पेड़-पौधे पर्यावरण को संतुलित बनाये रखते हैं।
पेड़-पौधे विभिन्न जीवों को आश्रय प्रदान करते हैं।
पेड़-पौधे भू-क्षरण को रोकते हैं।
पेड़-पौधों से हमें फल-फूल, दवाएँ, इमारती लकड़ी आदि मिलते हैं।

अब इन वाक्यों पर गौर करें -

पेड़-पौधे प्रकाश-संश्लेषण की क्रिया में ऑक्सीजन मुक्त करते हैं।
वे पर्यावरण को संतुलित बनाये रखते हैं।
वे विभिन्न जीवों को आश्रय प्रदान करते हैं।
वे भू-क्षरण को रोकते हैं।
उनसे हमें फल-फूल, दवाएँ, इमारती लकड़ी आदि मिलते हैं।

सर्वनाम के भेद (Kinds of Pronoun)

1. पुरुष वाचक सर्वनाम (Personal Pronoun)
2. निश्चय वाचक सर्वनाम (Definite Pronoun)
3. अनिश्चय वाचक सर्वनाम (Indefinite Pronoun)
4. सम्बन्ध वाचक सर्वनाम (Relative Pronoun)
5. प्रश्न वाचक सर्वनाम (Interrogative Pronoun)
6. निज वाचक सर्वनाम

1. पुरुष वाचक सर्वनाम (Personal Pronoun) :-

बोलने वाला व्यक्ति अपने लिए, सुनने वाले के लिए तथा अन्य के लिए जिन सर्वनामों का प्रयोग करता है, उन्हें पुरुष वाचक सर्वनाम (Personal Pronoun) कहते हैं।
ये तीन प्रकार के होते हैं –

उत्तम पुरुष (1st Person)	**मध्यम पुरुष (2nd Person)**	**अन्य पुरुष (3rd Person)**
बोलने वाला अपने लिए जिन सर्वनामों का प्रयोग करता है, उन्हें उत्तम पुरुष वाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे – मैं, हम, हमने, हमारा, अपना आदि। **मैं** फिल्म देखना चाहता हूँ। **मैं** घर जाना चाहती हूँ।	बोलने वाला सुनने वाले के लिए जिन सर्वनामों का प्रयोग करता है, उन्हें मध्यम पुरुष वाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे – तू, तुम, आप, तुम्हें, आपको आदि। **आप** कहते हैं तो ठीक ही होगा। **तुम** जब तक आये तब तक वह चला गया।	अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम वे शब्द हैं जो किसी अन्य व्यक्ति के बारे में कहे जाते हैं। जैसे – वह, यह, उसका, कोई, उनका आदि।

2. निश्चय वाचक सर्वनाम (Definite Pronoun) :-

जिस सर्वनाम से किसी व्यक्ति या वस्तु की ओर निश्चयपूर्वक संकेत किया जाए उसे निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे – यह, वह ।

उदाहरण:

यह कार मेरी है।

वह मोटरबाइक तुम्हारी है।

ये पुस्तकें मेरी हैं।

वे मिठाइयाँ हैं।

यह एक गाय है।

3. **अनिश्चय वाचक सर्वनाम (Indefinite Pronoun)** :-

जिस सर्वनाम से किसी व्यक्ति या वस्तु की ओर निश्चयपूर्वक संकेत न किया जाए उसे निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे – सब, कोई, कुछ आदि।

उदाहरण-

सब लोग सो रहे थे।

दरवाजे पर कोई है।

कुछ फल पक गए हैं।

मुझे कुछ खाना है।

मेरे खाने में कुछ गिर गया।

मुझे बाज़ार से कुछ लाना है।

कोई आ रहा है।

मुझे कोई नज़र आ रहा है।

4. सम्बन्ध वाचक सर्वनाम (Relative Pronoun) :-

जिस सर्वनाम से किसी एक वाक्य या वस्तु का दूसरे के साथ सम्बन्ध प्रकट हो, उसे सम्बन्धवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे – जो, सो। (जो करेगा, सो भरेगा)

उदाहरण:

जैसी करनी **वैसी** भरनी।

जो सोवेगा **सो** खोवेगा **जो** जागेगा **सो** पावेगा।

जैसा बोओगे **वैसा** काटोगे।

5. प्रश्न वाचक सर्वनाम (Interrogative Pronoun) :-

जो सर्वनाम प्रश्न पूछने के लिए प्रयुक्त हो, उसे प्रश्न वाचक सर्वनाम कहते हैं।
जैसे – कौन, क्या, किसका आदि।

उदाहरण:

देखो तो **कौन** आया है?

आपने **क्या** खाया है?

6. निजवाचक सर्वनाम

जिन शब्दों का प्रयोग वक्ता किसी चीज़ को अपने साथ दर्शाने या अपनी बताने के लिए करता है, वे निजवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

निजवाचक सर्वनाम के उदाहरण:

जैसे-:

* **मैं** अपने कपड़े **स्वयं** धो लूँगा।
* **मैं** वहां अपने **आप** चला जाऊंगा।

ऊपर दिए वाक्यों में वक्ता ने खुद के लिए स्वयं और अपने आप का प्रयोग कामों को खुद से जोड़ने के लिए किया।

सर्वनामों के रूप

मैं (I)

1st Person

एक वचन (Singular)	बहु वचन (Plural)
मैं, मैंने	हम, हमने
मुझे, मुझको	हमें, हमको
मुझसे, मेरे द्वारा	हम से, हमारे द्वारा
मुझको, मेरे लिए	हमको, हमारे लिए
मुझसे	हमसे
मेरा, मेरी, मेरे	हमारा, हमारी, हमारे
मुझमें, मुझ पर	हम में, हम पर

तू (You)

2nd Person

एक वचन (Singular)	बहु वचन (Plural)
तू, तूने	तुम, तुमने
तुझे, तुझको	तुम्हें, तुमको
तुझसे, तेरे द्वारा	तुम से, तुम्हारे द्वारा
तुझको, तेरे लिए	तुमको, तुम्हारे लिए
तुझसे	तुमसे
तेरा, तेरी, तेरे	तुम्हारा, तुम्हारी, तुम्हारे
तुझमें, तुझ पर	तुम में, तुम पर

आप (You)

2nd Person

***'आप' शब्द का एकवचन तथा बहुवचन (आदर सूचक) एक रूप रहता है।**

बहु वचन (Plural)
आप, आपने
आपको,
आप से, आपके द्वारा
आप को, आपके लिए
आप से,
आपका, आपकी, आपके
आप में, आप पर

यह (निश्चय वाचक सर्वनाम)

3rd Person

एक वचन (Singular)	बहु वचन (Plural)
यह, इस, इसने	ये, इन, इन्होंने
इसे, इसको	इन्हें, इनको
इससे, इसके द्वारा	इनसे, इनके द्वारा
इसको, इसके लिए	इनको, इनके लिए
इससे	इनसे
इसका, इसकी, इसके	इनका, इनकी, इनके
इसमें, इस पर	इनमें, इन पर

कोई (अनिश्चय वाचक सर्वनाम)

3rd Person

एक वचन (Singular)	बहु वचन (Plural)
कोई, किसी ने	कोई, किन्हीं ने
किसी को	किन्हीं को
किसी से, किसी के द्वारा	किन्हीं से, किन्हीं के द्वारा
किसी को, के लिए	किन्हीं को, के लिए
किसी से	किन्हीं से
किसी का, की, के	किन्हीं का, की, के
किसी में, किसी पर	किन्हीं में, किन्हीं पर

जो (सम्बन्ध वाचक)

3rd Person

एक वचन (Singular)	बहु वचन (Plural)
जो, जिसने	जो, जिन्होंने
जिसको	जिनको
जिससे, जिसके द्वारा	जिनसे, जिनके द्वारा
जिसको, जिसके लिए	जिनको, जिनके लिए
जिससे	जिनसे
जिसका, जिसकी, जिसके	जिनका, जिनकी, जिनके
जिसमें, जिस पर	जिनमें, जिन पर

कोई (अन्य पुरुष वाचक)

3rd Person

एक वचन (Singular)	बहु वचन (Plural)
कोई, किसी ने	कोई, जिन्हीं ने
किसी को	किन्हीं को
किसी से, किसी के द्वारा	किन्हीं से, किन्हीं के द्वारा
किसी को, किसी के लिए	किन्हीं को, किन्हीं के लिए
किसी से	किन्हीं से
किसी का, किसी की, के	किन्हीं का, किन्हीं की, किन्हीं के
किसी में, किसी पर	किन्हीं में, किन्हीं पर

कौन (प्रश्न वाचक सर्वनाम)

3rd Person

एक वचन (Singular)	बहु वचन (Plural)
कौन, किसने	कौन, किन्होंने
किसे, किसको	किन्हें, किनको
किससे, किसके द्वारा	किनसे, किनके द्वारा
किसे, किसको, किसके लिए	किन्हें, किनको, किनके लिए
किससे	किनसे
किसका, किसकी, किसके	किनका, किनकी, किनके
किसमें, किस पर	किनमें, किन पर

अशुद्धि संशोधन

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
प्रीक्षा		विद्यार थी	
द्रिष्टान्त		मित्तर	
सकूल		परसंग	
उतीर्ण		पुन्य	
दिवय		कार्ण	
मिन्ट		जनम	
आग्या		प्रशन्न	
जनम		सवर्ग	
इस्त्री		रित	

अशुद्धि संशोधन

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
विघन		अधियापक	
निरभयता		रिण	
परष्पर		सुआगत	
पुरष		पवित्तर	
हिरदय		नमसते	
किरपा		आकर्मन	
यग्य		प्रनाम	
प्रन्तु		निशचित	

अशुद्धि संशोधन

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
प्रीक्षा	परीक्षा	विद्यारथी	विद्यार्थी
द्रिष्टान्त	दृष्टान्त	मित्तर	मित्र
सकूल	स्कूल	परसंग	प्रसंग
उतीर्ण	उत्तीर्ण	पुन्य	पुण्य
दिवय	दिव्य	कार्ण	कारण
मिन्ट	मिनट	जनम	जन्म
आग्या	आज्ञा	प्रशन्न	प्रसन्न
जनम	जन्म	सवर्ग	स्वर्ग
इस्त्री	स्त्री	रितु	ऋतु

अशुद्धि संशोधन

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
विघन	विघ्न	अधियापक	अध्यापक
निरभयता	निर्भयता	रिण	ऋण
परष्पर	परस्पर	सुआगत	स्वागत
पुरष	पुरुष	पवित्तर	पवित्र
हिरदय	हृदय	नमसते	नमस्ते
किरपा	कृपा	आकर्मन	आक्रमण
यग्य	यज्ञ	प्रनाम	प्रणाम
प्रन्तु	परन्तु	निशचित	निश्चित

उपयोगी शब्द

1. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द :

1.	जिसका आदि न हो	-	अनादि
2.	जिसका अन्त न हो	-	अनन्त
3.	जिसका ईश्वर में विश्वास हो	-	आस्तिक
4.	जिसका ईश्वर में विश्वास न हो	-	नास्तिक
5.	काम से जी चुराने वाला	-	कामचोर
6.	जो किसी के उपकार को माने	-	कृतज्ञ
7.	जो किसी के उपकार को न माने	-	कृतघ्न
8.	सरलता से समझ में आने वाला	-	सुबोध
9.	जो किसी के पक्ष में न हो	-	निष्पक्ष
10.	जो कम भोजन करता हो	-	मिताहारी
11.	जो कम बोलता हो	-	मितभाषी
12.	पन्द्रह दिन में एक बार होने वाला	-	पाक्षिक
13.	जिसे अक्षरों का ज्ञान हो	-	साक्षर

14. दूर की सोचने वाला - दूरदर्शी
15. जानने की इच्छा रखने वाला - जिज्ञासु
16. जिसका आचरण शुद्ध (अच्छा) हो - सदाचारी
17. जो कहा न जा सके - अकथनीय
18. जिसमें धैर्य न हो - अधीर
19. जो सब जानता हो - सर्वज्ञ
20. जो आंखों के सामने न हो - अप्रत्यक्ष
21. जिसका वर्णन करना कठिन हो - अवर्णनीय
21. अंडे से जन्म लेने वाला - अण्डज
22. पृथ्वी से संबंध रखने वाला - पार्थिव
23. जो अचानक आ गया हो - अतिथि
24. जल से जन्म लेने वाला - जलज
25. विष्णु का उपासक - वैष्णव
26. अधिक वर्षा - अतिवृष्टि
27. जिसका कोई शत्रु न हो - अजातशत्रु
28. जो शब्द से व्यक्त न किया जा सके - अनिवर्चनीय
29. तीनों कालों (भूत, वर्तमान, भविष्य) को जानने वाला - त्रिकालदर्शी

2. पर्यायवाची (Synonyms) :

1.	आकाश	:	नभ, गगन, व्योम, अम्बर
2.	आग	:	अग्नि, पावक, अनल, वैश्वानर
3.	आंख	:	नेत्र, नयन, चक्षु
4.	हाथी	:	गज, हस्ती, मतंग
5.	कमल	:	नीरज, जलज, अंबुज, पंकज, अरविंद
6.	बादल	:	नीरद, जलद, अंबुद, मेघ, जलधर
7.	भँवरा	:	भ्रमर, अलि, मधुकर
8.	मिठास	:	माधुर्य, मधुरिमा
9.	समुद्र	:	सागर, सिंधु, अम्बुधि, नीरधि, जलधि
10.	सौन्दर्य	:	सुन्दर, शोभा, सुषमा
11.	सूर्य	:	रवि, सविता, भानु, भास्कर, दिनकर, निदेश
12.	दिन	:	वासर, दिवस, वार
13.	दूध	:	दुगध, गोरस, पय
14.	मित्र	:	सखा, सहचर, दोस्त, बन्धु
15.	रात्रि	:	रात, निशा, यामिनी, रजनी
16.	वन	:	जंगल, कानन, अरण्य

3. विलोम शब्द (Antonyms) :

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
हर्ष	विषाद	सदाचार	दुराचार
यौवन	वार्द्धक्य	यश	अपयश
पण्डित	मूर्ख	उष्ण	शीत
कटु	मधुर	आकर्षण	विकर्षण
प्रत्यक्ष	परोक्ष	प्रशंसा	निन्दा
खरा	खोटा	अंधेरा	उजाला
उदार	कृपण	आय	व्यय
आदि	अंत	उत्कर्ष	अपकर्ष
स्वार्थी	परमार्थी	कृश	स्थूल
आधुनिक	प्राचीन	अग्रज	अनुज

सप्ताह के दिनों के नाम (हिन्दी में)

Monday	सोमवार
Tuesday	मंगलवार
Wednesday	बुधवार
Thursday	बृहस्पतिवार
Friday	शुक्रवार
Saturday	शनिवार
Sunday	रविवार

वर्ष के महीनों के नाम (हिन्दी में)

January	जनवरी (JANVARI)
February	फरवरी (FARVARI)
March	मार्च (MARCH)
April	अप्रैल (APRAIL)
May	मई (MAI)
Jun	जून (JOON)
July	जुलाई (JULAAI)
August	अगस्त (AGAST)
September	सितम्बर (SITAMBAR)
October	अक्टूबर (AKTOOBAR)
November	नवम्बर (NAVAMBAR)
December	दिसम्बर (DISAMBAR)

सामान्य बोलचाल और उपयोग के शब्द

Potato	आलू (AALOO)	Garlic	लहसुन (LAHSUN)
Onion	प्याज (PYAAZ)	Ginger	अदरक (ADARAKH)
Bottle guard	लौकी (LAUKI)	Tomato	टमाटर (TAMAATAR)
Brinjal	बैंगन (BAINGAN)	Mutton	माँस (MAANS)
Coconut	नारियल (NARIYAL)	Egg	अंडा (ANDAA)
Reddish	मूली (MOOLI)	Fish	मछली (MACHHLEE)
Ladies finger	भिंडी (BHINDI)	Rice	चावल (CHAAVAL)
Green chilly	हरी मिर्च (HARI MIRCH)	Wheat	गेहूँ (GEHOON)
Ridge gourd	तोरी / तुरई (TORI / TURAI)	Flour	आटा (AATAA)
Cauliflower	फूल गोभी (PHOOL GOBHI)	Ghee	घी (GHEE)
Cabbage	पत्ता गोभी / बंद गोभी (PATA GOBHI / BAND GOBHI)	Sugar	चीनी / शक्कर (CHEENEE / SHAKKAR)
Carrot	गाजर (GAJAR)	Pulse	दाल (DAAL)

कार्यालयीन हिंदी

कार्यालयीन हिंदी की प्रमुख विशेषताएं:

1. कार्यालयीन हिंदी में प्रयुक्त शब्द निश्चित अर्थ देते हैं।
2. कार्यालयीन हिंदी का प्रयोग कार्यालयों में टिप्पणी लिखने या पत्राचार के संदर्भ में होता है।
3. कार्यालयीन हिंदी का स्वरूप औपचारिक होता है अर्थात इसमें व्यक्ति सापेक्षता की अपेक्षा निर्वैयक्तिक संरचना होती है क्योंकि इसमें व्यक्ति की अपेक्षा पदनाम प्रमुख होता है।
4. भाषा कर्मवाच्य प्रधान होती है। अत: वास्तविक कर्ता का उल्लेख नहीं होता। जैसे छुट्टी स्वीकृत की जा सकती है। गृह ऋण संबंधी आवेदन अस्वीकृत ।
5. कार्यालयीन हिंदी में भाषा की सरलता और स्पष्टता अनिवार्य है। इसमें द्विअर्थी और अटपटे शब्दों के प्रयोग से बचना चाहिए।
6. सर्वनाम में एक व्यक्ति के लिए भी आदरार्थ बहुवचन का प्रयोग किया जाता है। जैसे- वे, उन्हें, उनसे, उनके, उनका आदि।

पत्र क्या है ?

पत्र संदेशों के आदान-प्रदान का महत्वपूर्ण साधन है। सभ्यता के विकास के साथ पत्रों के प्रयोग में वृद्धि होती गई है। आरंभ में पत्र भेजने का एकमात्र साधन मनुष्य थे जिन्हें हरकारा कहा जाता था। आज साधारण डाक, पंजीकृत डाक, कूरियर आदि से पत्र आदि भेजना साधारण बात है।

विभिन्न सरकारी दफ्तरों के बीच और किसी सामान्य जन और सरकारी दफ्तरों के बीच सूचनाओं और आदेशों का आदान प्रदान भी सामान्यत: पत्रों के माध्यम से होता है।

सरकारी पत्र

सरकारी पत्र साधारणत: होते हैं –

• शासकीय पत्र	Official Letters
• कार्यालय ज्ञापन,	Office Memorandum
• अनुस्मारक पत्र,	Reminder Letters
• परिपत्र,	Circular
• अधिसूचना,	Notification
• अर्ध शासकीय पत्र,	Demi-Official Letters
• अदालती नोटिस,	Court Notices
• प्रेस विज्ञप्ति / प्रेस नोट	Press Release/Press note
• ज्ञापन	Memorandum
• सूचना	Notice
• पृष्ठांकन	Endorsement
• अनौपचारिक टिप्पणी	Unofficial Note
• निविदा सूचना	Tender Notice
• ई.मेल	E-mail ……. etc....

पत्र के अंग

पत्र के सामान्यत: निम्नलिखित अंग होते हैं –

(1)शीर्ष – इसमें सरकार तथा संबंधित मंत्रालय/कार्यालय के नाम का उल्लेख होता है
(2)पत्रांक एवं दिनांक
(3)पत्र पाने वाले का नाम, पद एवं पता
(4)पत्र का विषय
(5)संदर्भ (यदि हो)
(6)अभिवादन
(7)पत्र का वर्णनीय मुख्य अंग
(8)सम्बन्ध प्रदर्शित करने वाला पद
(9)पत्र भेजने वाले के हस्ताक्षर, पदनाम
(10)सरकारी पत्र व्यवहार करते समय पत्र के अंत में भवदीय लिखकर प्रेषक अपने हस्ताक्षर करता है तथा

पाठ 8
सरकारी पत्र

उद्देश्य : इस पाठ में हम सरकारी पत्र का प्रयोजन, प्रारूप, विभिन्न स्थितियों में प्रयोग के साथ-साथ विभिन्न वाक्य सांचे, अभिव्यक्ति, शब्दावली का अभ्यास करेंगे। इसमें हम सामान्य पत्रों के अलावा तीन विशेष पत्रों का भी अध्ययन करेंगे।

प्रयोजन : सूचनाओं के आदान-प्रदान यानी सूचना लेने या देने के लिए।

किसके लिए: कार्यालय से इतर व्यक्तियों, कंपनियों, संस्थाओं, स्वैच्छिक संगठनों, राज्य सरकारों आदि से सूचनाओं के आदान-प्रदान हेतु।

किन मामलों में

1. किसी व्यक्ति से सूचना लेने या देने के लिए;
2. विदेशी सरकारों/संयुक्त राष्ट्र संघ से सूचना लेने या देने के लिए;
3. राज्य सरकारों/केंद्र शासित प्रदेशों से सूचना लेने या देने के लिए;
4. संवैधानिक निकायों (constitutional bodies) तथा सांविधिक निकायों (statutory bodies) से सूचना लेने या देने के लिए;
5. अधीनस्थ/संबद्ध कार्यालयों के कार्यालय प्रमुखों से सूचना लेने या देने के लिए;
6. उपक्रमों/उद्यमों/राष्ट्रीयकृत बैंकों/सहकारी बैंकों/ निगमों/स्वायत्तशासी निकायों/ निगमित कंपनियों/स्वैच्छिक संस्थाओं/विभिन्न प्रकार के संगठनों/संघों आदि से सूचना लेने या देने के लिए।

नोट : मंत्रालय/विभाग परस्पर सूचनाओं के आदान-प्रदान हेतु कभी भी पत्र का प्रयोग नहीं करते बल्कि इसके स्थान पर वे कार्यालय ज्ञापन या अंतरविभागीय टिप्पणी का प्रयोग करते हैं।

प्रारूप : आगे नमूने में देखेंगे।

भाषा : सरकारी पत्र की भाषा में सभी कार्यालयीन विशेषताएँ होती हैं अर्थात्र इसकी भाषा सरल और स्पष्ट होती है। इसमें अस्पष्ट, अनिश्चित और दो अर्थ देने वाले शब्दों का प्रयोग नहीं किया जाता। इसमें उत्तम पुरुष (मैं) का प्रयोग कदापि नहीं होता। इसमें प्रथम पुरुष एक वचन का प्रयोग अप्रत्यक्ष होता है। केवल I have been directed आदि संदर्भों में 'मुझे' का प्रयोग होता है।

सरकारी पत्र सरकार द्वारा व्यक्त विचारों/निर्णयों आदि की सूचना देते हैं इसलिए इसमें व्यक्त विचार या भाव सरकार के होते हैं न कि किसी अधिकारी विशेष के।

सरकारी पत्र का नमूना

पत्र शीर्ष

.....

स्थान: .....
दिनांक: .....

सेवा में,
सचिव,
..... कार्यालय
..... मंत्रालय ....

विषय- ....

महोदय/महोदया,

.....
.....पत्र का कलेवर .....
.....

भवदीय/भवदीया,

हस्ताक्षर
(कखग)
पदनाम

.....

पृष्ठांकन संख्या ....., दिनांक ..... की प्रति सूचना तथा कार्रवाई निम्नलिखित को प्रेषित –

1. .....
2. .....

हस्ताक्षर
(कखग)
पदनाम

अर्ध-सरकारी पत्र का नमूना

प्रतीक चिह्न

क.ख.ग.

.....

पदनाम

मंत्रालय,

दूरभाष .....

कार्यालय,

देहरादून

अ.स.प.सं.

भारत सरकार, ...

.....

.....

दिनांक: .....

आदरणीय/प्रिय/प्रियश्री/माननीय,

.....

.....

.....पत्र का कलेवर

.....

.....

.....

शुभकामनाओं सहित / सादर,

आपका/शुभेच्छु/शुभाकांक्षी

हस्ताक्षर

(कखग)

1/27/2021

टिप्पणी लेखन

टिप्पणी लेखन के दो स्तर होते हैं –

1.अधिकारी स्तर पर – प्रशासनिक नेमी टिप्पणी एवं स्वत:पूर्ण टिप्पणी
2.सहायक स्तर पर - आवती पर आधारित टिप्पणी एवं स्वत:पूर्ण टिप्पणी

टिप्पणी लेखन के उद्देश्य –

1.सभी तथ्य स्पष्ट और संक्षिप्त रूप में संबंधित अधिकारी के समक्ष प्रस्तुत करना ।
2.किसी विशेष विषय या पत्र व्यवहार पर उपलब्ध तथ्य या प्रमाण की ओर ध्यान दिलाना ।
3.अपेक्षित विषय या पत्र-व्यवहार पर विचार स्पष्ट करना।

-**स्वत:पूर्ण** टिप्पणी किसी आवती पर आधारित न होकर परिस्थिति तथा आवश्यकता से उत्पन्न समस्या को हल करने के लिए **होती है। टिप्पणी का यह स्वरूप स्वतंत्र टिप्पणी के रूप में होता है। टिप्पणी पर फाइल संख्या, कार्यालय, विभाग का नाम, दिनांक और विषय का उल्लेख किया जाना चाहिए। टिप्पणी** के अंत में **दाईं ओर अधिकारी के** आद्याक्षर होते हैं एवं बाईं ओर उच्चाधिकारी को प्रस्तुत की जाती है। उच्च अधिकारी भी अपनी **टिप्पणी के उपरांत दाईं ओर अपने हस्ताक्षर करते हैं।**

-आवती पर आधारित टिप्पणी सहायक निम्न प्रकार प्रस्तुत करता है –

1. **आवती का विषय**
2. **कारण**
3. **नियम**
4. **कार्यालय में संबंधित विषय/कार्य की स्थिति**
5. **सुझाव**

हर साल की तरह इस साल भी प्रगति मैदान में 14 नवंबर से अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेला लगा है। हमने पिछले साल भी यह मेला देखा था। इस बार भी बच्चों ने आग्रह किया। इसलिए हम पिछले रविवार को मेला देखने गए।

इस बार मेले में भारत के सभी राज्यों के साथ-साथ कई अन्य देशों ने भी हिस्सा लिया। यहाँ चीन, जापान तथा कोरिया आदि देशों की बड़ी-बड़ी कंपनियाँ अपना सामान लेकर आई हैं। पिछले साल कुछ विदेशी कंपनियाँ मेले में नहीं आई थीं।

पिछली बार भीड़ की वजह से हम जापान पैवेलियन नहीं देख सके थे इसलिए सबसे पहले हम जापान के पैवेलियन में गए। जापानी पैवेलियन में मशीनें देखने लायक थीं व इसमें हर तरह के इलैक्ट्रॉनिक सामान जैसे टी०वी०, वाशिंग मशीनें तथा फ्रिज आदि का प्रदर्शन किया गया था। हमने भी यहाँ से “सोनी” का फ्लैट स्क्रीन टी०वी० खरीदा। मेले में कोरिया का पैवेलियन बहुत अच्छा था।

प्रश्न 1 – अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेला कहां लगता है ?

प्रश्न 2 – अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेला कितने वर्ष में लगता है ?

प्रश्न 3 – अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेले में किन-किन देशों ने अपने सामान का प्रदर्शन किया है ?

प्रश्न 4 – लेखक सबसे पहले किस देश के पैवेलियन में गया ?

प्रश्न 5 – लेखक ने अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेले से क्या खरीदा ?

प्रश्न 6 – किस देश के पैवेलियन में मशीनें देखने लायक थीं ?

प्रश्न 7 – प्रस्तुत पाठ का उचित 'शीर्षक' दीजिए ।

ग्रामों में प्रकृति का प्रभुत्व है। वहां की धरती हरित परिधान धारण किए दिखलाई पड़ती है। पक्षियों का कलरव सबका मन मोह लेता है। बागों में मयूर नृत्य करते दिखलाई पड़ते हैं। कोयल का मधुर गान सबके हृदय को छू लेता है। प्रकृति का कण-कण मानव जीवन को उम्मीद से भर देता है। ग्रामीणों की विशेषता है कि वह स्वभाव के सरल होते हैं। उनका रहन-सहन सादा होता है। वे अतिथि का बहुत सम्मान करते हैं। वे एक दूसरे की सहायता के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। उनमे छल कपट नाम को भी नहीं होता। शिक्षित ना होने पर भी उनमें एक दूसरे के लिए अपार श्रद्धा होती है।

इसके विपरीत नगरों में उन्नति के सभी साधनों की सुविधा उपलब्ध होती है। इसी कारण नगरवासी सभ्य, शिक्षित, चतुर और गुणी समझे जाते हैं। यहां उद्योग और व्यापार तेजी से पनपता है। इसलिए यहां के लोग धनवान होते हैं। यहां के निवासी भौतिकवादी व अवसरवादी हो जाते हैं। इसमें स्वार्थपरता की भावना अधिक हो जाती है। उनके व्यवहार में कृत्रिमता अधिक तथा वास्तविकता कम होती है। अधिकतर बुराइयों को नगरों में ही आश्रय मिलता है। यहां वाहनों की अधिकता के कारण प्रदूषण भी प्रचुर मात्रा में पनपता है। यहां अनेक प्रकार के अपराध जन्म लेते तथा पनपते हैं।